प्रेरित के रूप में अपनी सेवकाई में पौलुस केवल इस बात तक सीमित नहीं था कि लोग मसीह को स्वीकार करें और अपने पापों की क्षमा प्राप्त करें। उसकी दृष्टि इससे कहीं अधिक व्यापक थी। पौलुस ने पूरे परिश्रम से विश्वासियों को परमेश्वर की सम्पूर्ण सम्मति सिखाई—वे दिव्य सत्य और छिपे हुए भेद भी, जो प्राचीन काल से पवित्रशास्त्र में छिपे हुए थे (प्रेरितों के काम 20:27)।

पौलुस जानता था कि आत्मिक अज्ञानता मसीही जीवन को अपंग बना सकती है। इसी कारण उसने कलीसिया को चेतावनी दी:

इफिसियों 5:17 –
“इस कारण मूर्ख न बनो, परन्तु समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।”

पौलुस के लिए अज्ञानता कोई साधारण बात नहीं थी—वह खतरनाक थी। इसका अर्थ था ऐसे जीवन को जीना जिसमें वह ज्ञान न हो जो विश्वासियों को जय और उद्देश्य के साथ चलने की सामर्थ देता है। दिव्य समझ के बिना मसीही लोग असुरक्षित, भ्रमित और निष्फल हो जाते हैं।

आत्मिक अज्ञानता क्या है?

आत्मिक अज्ञानता केवल तथ्यों को न जानने का नाम नहीं है। यह उस दिव्य समझ की कमी है जो जीवन का मार्गदर्शन करती है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति यह न जानता हो कि मोबाइल फोन भी होते हैं। वह दूर रहने वाले रिश्तेदार को संदेश देने के लिए कई दिनों तक पैदल चलता है। यदि उसे तकनीक का ज्ञान होता, तो संवाद बहुत आसान और तेज़ होता।

इसी प्रकार, बहुत से मसीही विश्वास की कमी के कारण नहीं, बल्कि समझ की कमी के कारण कष्ट उठाते हैं। जैसा कि परमेश्वर होशे में कहता है:

होशे 4:6 –
“मेरे लोग ज्ञान के अभाव के कारण नाश हो जाते हैं।”

आप परमेश्वर की सेवा उतनी ही प्रभावी रूप से कर सकते हैं, जितना उसका प्रकाशन आपको मिला है। जितना अधिक आप परमेश्वर को समझेंगे, उतना ही आपका जीवन जय और उद्देश्य से भरा होगा।

पौलुस बार-बार इस बात पर ज़ोर देता रहा कि विश्वासियों को आत्मिक समझ में बढ़ना चाहिए। आइए उन मुख्य सत्यों को देखें

जिनके विषय में वह नहीं चाहता था कि कलीसिया अज्ञानी रहे।

1. पुनरुत्थान की आशा

1 थिस्सलुनीकियों 4:13 –
“हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में अज्ञान रहो जो सो गए हैं, ताकि तुम औरों की नाईं शोक न करो, जिनकी कोई आशा नहीं।”

पौलुस ने सिखाया कि जो मसीह में मरते हैं, वे प्रभु के आगमन पर जी उठेंगे। यह सत्य शोक के समय हमें सांत्वना देता है और कब्र से परे की आशा प्रदान करता है। इस ज्ञान के बिना दुःख हमें वैसे ही निगल सकता है जैसे उन लोगों को जो मसीह को नहीं जानते।

2. पवित्र लोग संसार का न्याय करेंगे

1 कुरिन्थियों 6:2–3 –
“क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग संसार का न्याय करेंगे?… क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे?”

पौलुस ने प्रकट किया कि जो विश्वासी जयवंत होते हैं, वे परमेश्वर के भविष्य के राज्य में भूमिका निभाएंगे—यहाँ तक कि

संसार और स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे। यह गहरा सत्य हमें पवित्र जीवन जीने और अपनी अनन्त बुलाहट के लिए तैयार होने की प्रेरणा देता है।

3. पुराने नियम में छिपा हुआ मसीह

1 कुरिन्थियों 10:1–4 –
“…वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।”

पौलुस ने दिखाया कि यीशु पुराने नियम में भी उपस्थित था। इस्राएल के इतिहास की घटनाएँ और प्रतीक—जैसे मन्ना और चट्टान—मसीह की ओर संकेत करने वाली छायाएँ थीं। यह हमें पुराने नियम को मसीह-केन्द्रित दृष्टि से पढ़ने का आह्वान करता है।

4. सेवकाई में दुःख और कष्ट

2 कुरिन्थियों 1:8 –
“हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम उस क्लेश से अज्ञानी रहो जो एशिया में हम पर पड़ा…”

परमेश्वर की सेवा करना सदा आसान नहीं होता। पौलुस ने सुसमाचार के कारण भारी सताव और कष्ट सहे। यह समझना कि परीक्षाएँ मसीही जीवन का भाग हैं, हमें कठिन समय में भी विश्वासयोग्य बने रहने में सहायता करता है।

5. आपका शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है

1 कुरिन्थियों 3:16–17 –
“क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?”

हमारे शारीरिक शरीर पवित्र हैं—वे पवित्र आत्मा का निवास स्थान हैं। पौलुस ने चेतावनी दी कि जो कोई पाप या दुरुपयोग के द्वारा इस मन्दिर को भ्रष्ट करता है, उस पर न्याय आएगा। यह सत्य हमें अपने शरीर से परमेश्वर की महिमा करने की शिक्षा देता है।

6. सुसमाचार के सेवकों के लिए प्रावधान

1 कुरिन्थियों 9:13–14 –
“क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर की सेवा करते हैं, वे मन्दिर से भोजन पाते हैं?… इसी प्रकार प्रभु ने भी ठहराया है कि सुसमाचार सुनाने वाले सुसमाचार से ही जीवन यापन करें।”

पौलुस ने स्पष्ट किया कि सुसमाचार के सेवकों के लिए भौतिक सहायता परमेश्वर की ठहराई हुई व्यवस्था है। यह मनुष्य की राय नहीं, बल्कि ईश्वरीय योजना है।

7. पवित्र आत्मा के वरदान

1 कुरिन्थियों 12:1 –
“हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अज्ञानी रहो।”

आज कई मसीही या तो आत्मिक वरदानों पर संदेह करते हैं या फिर समझ की कमी के कारण उनका दुरुपयोग करते हैं। पौलुस ने कलीसिया को सिखाया कि पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है—उसकी सामर्थ, सेवकाइयाँ और वरदान कलीसिया की उन्नति के लिए दिए गए हैं।

8. जातियों और इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना

रोमियों 11:25 –
“हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अज्ञानी रहो… इस्राएल पर कुछ अंश तक कठोरता आई है, जब तक कि अन्यजातियों की परिपूर्णता पूरी न हो जाए।”

पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर की एक समय-रेखा है। इस समय सुसमाचार अन्यजातियों के पास जा रहा है, परन्तु एक समय आएगा जब परमेश्वर फिर से इस्राएल की ओर अपना ध्यान करेगा। जब “अन्यजातियों की परिपूर्णता” पूरी हो जाएगी, तब द्वार बंद होने लगेगा। यह सत्य हमें तत्कालता का बोध कराता है—आज उद्धार का दिन है।

अंतिम शब्द: अनुग्रह को हल्के में न लें

यदि अनुग्रह का युग अपने अंत की ओर बढ़ रहा है, तो उन लोगों के लिए क्या आशा बचेगी जिन्होंने दया के समय में मसीह को ठुकरा दिया? यीशु ने चेतावनी दी कि एक समय द्वार बंद हो जाएगा (लूका 13:25)। जब वह समय आएगा, तब बहुत देर हो चुकी होगी।

इसी कारण पौलुस ने विश्वासियों से आग्रह किया कि वे परमेश्वर की योजना, उसकी इच्छा और उसके मार्गों के विषय में अज्ञानी न रहें। अज्ञानता आपकी बुलाहट, आपकी शांति और यहाँ तक कि आपकी अनन्तता को भी छीन सकती है।

इसलिए पश्चाताप करें, पाप से फिरें, और जब तक समय है परमेश्वर की ओर लौट आएँ।

□□□□□□□□ — □□□□□ □ □□□ □□! ✝

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp